जैन दर्शन के पुरुषार्थ में मोक्ष का स्वरूप

डॉ. नवल किशोर पाण्डेय

जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप आत्मा का अपना स्वरूप है। यहाँ कल्पना की गई है कि आत्मा ऊर्ध्वगामी है– ''उडढं पक्कमई दिसं'', वह सदा ऊर्ध्व दिशा की ओर ही प्रस्थान करती है। दुर्भाग्य से, आसक्ति के कारण, कर्म–कण उसमें संलग्न हो गये हैं और इस प्रकार आत्मा के भारी हो जाने से वह अधोगति को प्राप्त है। किन्तु कर्म–बन्धन से जैसे–जैसे वह मुक्त होती जाती है, वह ऊर्ध्वगामी होती जाती है और पूर्ण–मुक्ति होने पर मोक्ष पा जाती है।

जैन दर्शन में मोक्ष को दो रूपों में वर्णित किया गया है– नकारात्मक और स्वीकारात्मक। जिस प्रकार उपनिषदों में 'नेति–नेति' सूत्र द्वारा आत्मा के बारे में वस्तुओं और विषयों को इंगित करते हुए कथन किये गए हैं कि आत्मा यह नहीं है, यह नहीं है, इत्यादि, उसी तरह जैन दर्शन में भी आत्मा/मोक्ष के स्वरूप का हमें प्रायः नकारात्मक वर्णन ही मिलता है। आगमिक साहित्य में कहा गया है कि वह न शब्द है, न रूप है, न गन्ध है, न रस है और न ही स्पर्श है।